Rupali Chauby

आदत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

Que (A) नैतिक मार्गदर्शन रूप में 'अंतरात्मा' को समझाइये?

A अंतःकरण मनुष्य की वह आंतरिक नैतिक शक्ति है जो सही-गलत का सामान्य ज्ञान, परिणाम प्राप्त पर विचार किये बिना ही प्रदान करती है।
- यह व्यक्ति को नैतिक पथ पर चलने के लिए प्रोत्साहित करती है।

(B) भ्रष्टाचार के प्रमुख प्रभावों की विवेचना कीजिये?

A भ्रष्टाचार के प्रभाव को किस प्रकार से देख सकते है -
- प्रशासन में अकर्मण्यता में वृद्धि होगी
- लाल फीताशाही को प्रोत्साहित करेगा
- प्रशासकीय व्यय में वृद्धि
- सामाजिक असमानता में वृद्धि
- लोककल्याणकारी राज्य की संकल्पना पूरी नहीं होगी आदि

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(C) महावीर स्वामी के पंच महाव्रत

जैन धर्म के २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी के जिनमे पंचमहाव्रत निम्न है -

(1) अहिंसा - मन, वचन, कर्म से किसी को हानि न पहुंचाने का संकल्प।

(2) सत्य => सदा सत्य बोलो की अवधारणा पर जोर

(3) अस्तेय => चोरी नहीं करना

(4) अपरिग्रह => धन्धनो का संग्रह न करना

(5) ब्रह्मचर्य => इन्द्रियों पर नियंत्रण, विषय वासनाओं का त्याग

(D) व्हिसल-ब्लोअर से आप क्या समझते है?

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

(e) ब्रह्म समाज के संस्थापक कौन है?

(उ) ब्रह्म समाज

स्थापना - 1828
संस्थापक - राजा राम मोहन राय आगे चलकर देवेन्द्र नाथ ठाकुर व केशव चंद्र सेन द्वारा आगे बढ़ाया
कार्य - सामाजिक - धार्मिक सुधार
- हिन्दू धर्म की कुरीतियों को दूर
- बौद्धिक व तार्किक जीवन पर बल आदि

(f) गीतांजली पुस्तक के लेखक कौन

गीतांजली

↳ लेखक रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा बांग्ला भाषा में लिखि
- यह कविताओं का संग्रह
- 1913 इसके लिए साहित्य का नोबल पुरस्कार दिया।

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

(G) अरस्तु द्वारा दिए गए चार कार्डिनल गुणों के नाम बताइये

अरस्तु द्वारा दिये गये चार कार्डिनल निम्न है

चारकार्डिनल
- → विवेक – यह कर्म प्रशासक थे
- → साहसी – यह कर्म योद्धा वर्ग
- → संयम → उत्पादक वर्ग
- → न्याय → तीनो वर्गों में हस्तक्षेप न कर न्याय की स्थिति उत्पन्न होगी।

(H) तुलसीदास की तीन प्रसिद्ध रचनाओं?

A तुलसीदास जी सगुण राम भक्ति धारा कवि है व इनकी रचनाएं
(1) रामचरित मानस – अवधी भाषा
– महाकाव्य
– राम के आदर्श जीवन पर प्रकाश

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

(2) गीतावली - वैराग्योपदेश, दोहा-चौपाई संरचित
(3) दोहावली - दोहा व सोरठे का संग्रह

(I) समानुभूति को समझाइये?

समानुभूति के अंतर्गत दूसरों की भावनाओं व परिस्थितियों को समझना उनकी कठिनाईयों व तकलीफों को तन्मयता से जुनना, गहनता से महसूस करने तथा उन्हें दूर करने का भाव निहित होता है।
- लोक सेवकों में समानुभूति का भाव होना आवश्यक ताकि जनहित में कार्य कर सकें।

(J) सर्वोदय का अर्थ समझाइये

A सर्वोदय की अवधारणा गांधी जी द्वारा दी गई जिसका अर्थ -
सभी का (स्त्री-पुरुष) आदि का सभी प्रकार से उदय (राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक, धार्मिक) से लिया जाता है।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार...

(4) मनोवृत्ति के संघटकों के नाम बताइए?

मनोवृत्ति के संघटक

- संज्ञानात्मक घटक - धारणा, विचार विश्वास लिया जाता
- भावनात्मक घटक - पसंद-नापसंद, सुख-दुःख भाव
- व्यवहारात्मक घटक - कार्य करने की तत्परता

(5) केन्द्रीय सतर्कता आयोग से आप क्या समझते है?

(M) सत्यनिष्ठता

A. सत्यनिष्ठता सिविल सेवा का आधारभूत मूल्य है जिसके अंतर्गत प्रलोभन, दबाव, भय एवं पूर्वाग्रह आदि से रहित होकर संवैधानिक मूल्यों के प्रति निष्ठा रखते हुए सार्वजनिक हित में अपने अधिकारों का प्रयोग करते हुए कर्तव्यों का दृढ़ता पूर्वक पालन करना है।

(N) भावनात्मक बुद्धिमत्ता

A. संवेगात्मक बुद्धि, मनुष्य की ऐसी क्षमता है जिससे वह अपने व दूसरों के संवेगों को देखते हैं, समझते हैं उनकी तीव्रता या प्रभाव का आकलन करते हुए उन्हें प्रबंधित व नियंत्रित करते हुए वांछित अनुक्रिया करता जिससे संवेगों का समन्वय बना रहे

(O)

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

(10) सद्गुण

उचित कर्मों के निरंतर पालन व अभ्यास से मनुष्य का विशेष प्रकार का नैतिक गुण विकसित होता है जिसे सद्गुण कहते है

- सद्गुण से चरित्र का उत्कर्ष होता
- सुकरात ने ज्ञान को सद्गुण कहा

प्र 2 (A) लोक-सेवकों हेतु आचरण संहिता को समझाइए?

आचरण संहिता से तात्पर्य किसी संगठन, समाज के पदान्यों के आचरण को नियमित व निर्देशित करने के लिए बनाए गए नियमों का समूह व संग्रह होता है जिसके अनुसार कार्य करने की अपेक्षा की जाती है तथा उल्लंघन पर अनुशासनात्मक कार्यवाही होती है

लोक सेवा में आचरण संहिता का प्रयोग होने से निम्न प्रकार से प्रभाव पड़ेगा

- ईमानदारी, पूर्णनिष्ठा व कर्तव्यनिष्ठा का पालन होगा
- प्रशासनिक कार्यकुशलता में वृद्धि होगी
- लोकसेवकों में निष्पक्षता, राजनैतिक तटस्थता का भाव निहित होगा
- नैतिक आचरण का विकास
- सत्ता के दुरुपयोग को रोका जा सकता है
- लोकसेवा के प्रति जनता का विश्वास बढ़ेगा

अतः लोकसेवकों के लिए आचरण संहिता का होना आवश्यक

है जिससे लोककल्याणकारी राज्य व सुशासन की स्थापना की जा सकती है।

(B) निष्पक्षता एवं अलगववादी, वस्तुनिष्ठा समझाइए?

A. निष्पक्षता, गैरसमर्थनवादी व वस्तुनिष्ठा यह लोक सेवा के आधारभूत है अतः लोक सेवकों से यह आशा की जाती है वह इन मूल्यों से युक्त हो व अपने कार्यों का संपादन करेंगे।

इन मूल्यों को निम्न प्रकार से देख सकते है-

निष्पक्षता => इसके अंतर्गत जाति, धर्म, लिंग, भाषा, क्षेत्र, सम्पत्ति आदि के आधार पर जनता के साथ भेदभाव नहीं करना।

अनसमर्थनवादी => लोकसेवक व्यक्तिगत रूप से किसी भी राजनीतिक दल में आस्था रखता या पसंद करता हो किंतु, प्रशासनिक कार्यों के संपादन के क्रम में किसी भी पक्ष की तरफदारी न करते हुए तटस्थता के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करता है।

वस्तुनिष्ठता => इसके अंतर्गत सिविल

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

सेवकों द्वारा सार्वजनिक नियुक्तियाँ करने, संविदाओं की स्वीकृति, किसी व्यक्ति विशेष को पुरस्कृत, लाभ, कार्यों की संस्तुति आदि निर्णय लेते समय तथ्यों, साक्ष्यों को आधार बनाना, मनमाने तरीके से कार्य नहीं करना वस्तुनिष्ठता कहलाती है।

इन मूल्यों से युक्त सिविल सेवक अपने कर्तव्यों का पालन सत्यनिष्ठा, ईमानदारी व जवाबदेहिता से करेगा व जनहित में कार्य करेगा।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या 10

भ्रष्टाचार के प्रकारों की विवेचना कीजिये

संथानम समिति के अनुसार "भ्रष्टाचार का आशय किसी सरकारी कर्मचारी द्वारा कार्य निष्पादन के दौरान ऐसा कृत्य जो स्वार्थ की दृष्टि से किया जाये या जानबूझकर कार्य न करना भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता"

भ्रष्टाचार की अवधारणा व्यापक है इसे निम्न प्रकारों से देख सकते है-

- राजकीय पद या अधिकारों एवं शक्तियों का दुरुपयोग।
- सार्वजनिक धन तथा भंडार का अनावश्यक प्रयोग।
- आय से अधिक सम्पत्ति
- अनैतिक आचरण करना।
- उपहार प्राप्त करना।
- ठेकेदार या फर्मों को रियायत प्रदान करना।
- भर्ती, नियुक्ति, स्थानान्तरण, पदोन्नति के संबंध में गैर-कानूनी रूप से धन लेना।
- राजकीय आवास पर अनाधिकृत कब्जा
- आवासीय भूमि की खरीद-बिक्री में धोखाधड़ी
- राजकीय कर्मचारियों को अपने निजी कार्यों में प्रयोग।

10 भ्रष्टाचार के प्रकारों की विवेचना कीजिये

संथानम समिति के अनुसार "भ्रष्टाचार का आशय किसी सरकारी कर्मचारी द्वारा कार्य निष्पादन के दौरान ऐसा कृत्य जो स्वार्थ की पूर्ति से किया जाये या जानबूझकर कार्य न करना भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता"

भ्रष्टाचार की अवधारणा व्यापक है इसे निम्न प्रकारों से देख सकते हैं-

- शासकीय पद या अधिकारों एवं शक्तियों का दुरुपयोग।
- सार्वजनिक धन तथा भंडार का अनावश्यक प्रयोग
- आय से अधिक सम्पत्ति
- अनैतिक आचरण करना
- उपहार प्राप्त करना
- ठेकेदार या फर्मों को रियायत प्रदान करना
- भर्ती, नियुक्ति, स्थानान्तरण, पदोन्नति के संबंध में गैर-कानूनी रूप से धन लेना
- शासकीय आवास पर अनाधिकृत कब्जा
- शासकीय भूमि की खरीद-बिक्री में धोखाधड़ी
- शासकीय कर्मचारियों को अपने निजी कार्यों में प्रयोग

उपरोक्त भ्रष्टाचार की श्रेणी में लिये जाते है जो शासन प्रशासन को कमजोर, जनता का भरोसा कम कर रहा है इसके लिए कानूनो का कठोरता से पालन, नैतिक मूल्यों की जागृति, आचरण संहिता आदि का प्रयोग कर इसको कम करने का प्रयास किया जा रहा है

(D) दयानंद सरस्वती के सिद्धांत

दयानंद सरस्वती का मूल नाम 'मूलशंकर' था जो 19वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक कुप्रथाओं में एक तथा अपने कार्यों का संपादन 'आर्यसमाज' के माध्यम से करते थे।

दयानंद सरस्वती के सिद्धांत को निम्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है

सिद्धांत

1. सामाजिक क्षेत्र
2. राजनैतिक
3. धार्मिक क्षेत्र
4. शिक्षासंबंधी

सामाजिक क्षेत्र ⇒ वर्ण व्यवस्था के समर्थक किंतु वर्ण का निर्धारण कर्म हो न कि जन्म

- समाज में संतुलन व सामंजस्य के लिए कार्यों का विभाजन आवश्यक
- कुप्रथाओं का विरोध (दहेजप्रथा, पुरोहितवाद आदि)

राजनैतिक क्षेत्र ⇒ प्रजातंत्र के पोषक थे स्वतंत्रता, समानता पर विश्वास

- ग्राम शासन की अवधारणा दो, तीन, पांच ग्राम के पीछे एक प्रशासनिक कार्यालय हो

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

- भारतीय राष्ट्रवाद के पुजारी
- अहिंसा को अव्यावहारिक मानते हुए राजनैतिक व्यवस्था में दण्ड की अनिवार्यता स्वीकार

धार्मिक क्षेत्र ⇒ एकेश्वरवाद पर विश्वास
⇒ मूर्ति पूजा का विरोध
⇒ वैदिक ईश्वर पर बल
⇒ आत्मा की स्वतंत्रता इन्होंने कहा मनुष्य की आत्मा काम करने के लिए स्वतंत्र किंतु फल के लिए ईश्वर के अधीन
⇒ शुद्धि आंदो०

शिक्षा ⇒ गुरुकुल शिक्षा व्यवस्था को बल

स्वामी दयानंद सरस्वती जी के सिद्धांतो को प्रत्येक क्षेत्र में देख सकते है अतः वर्तमान में भी उनके प्रजातांत्रिक मूल्यों स्वराज की अवधारणा, वेदो की महत्ता आदि को स्वीकार किया जाता है

(6) लोकसेवा हेतु आधारभूत योग्यता को बताइये।

ब्रिटिश काल में लोकसेवको का कार्य कानून व्यवस्था को बनाए रखना नही 1947 के बाद लोकसेवको के कार्यों में वृद्धि हुई जिससे अनवार्य लोककल्याणकारी व सुशासन की स्थापना इसके सुचारु संचालन के लिए लोकसेवको को कुछ आधारभूत मूल्यों से युक्त होना चाहिए नोलन समिति ने लोकसेवको के लिए कुछ आधारभूत मूल्यों की बात कही जो निम्न

आधारभूत मूल्य

- निःस्वार्थ निष्ठता
- सत्यनिष्ठा
- वस्तुनिष्ठा
- जवाबदेहिता
- खुलापन
- ईमानदारी
- नेतृत्व

निःस्वार्थनिष्ठता => व्यक्तिगत हित को त्यागकर सार्वजनिक हित में निर्णय लेना

सत्यनिष्ठता => प्रलोभन, दबाव, भय आदि के कारण अपने कर्तव्यों से विमुख न होना

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

वस्तुनिष्ठता => सार्वजनिक नियुक्ति, पुरस्कार देने, लाभों की संस्तुति योग्यता को वरीयता

जवाबदेहिता => अपने कार्यों व निर्णयों के लिए जनता के प्रति जवाबदेह

खुलापन => निर्णय व कार्यों में पारदर्शिता

ईमानदारी => द्वन्द्व की स्थिति में व्यक्तिगत स्थिति की जगह सार्वजनिक हित को वरीयता।

नेतृत्व => उपरोक्त तत्वों का बढ़ावा व समर्थन करते हुए स्वयं को उदा. के रूप में प्रस्तुत

उपरोक्त मूल्यों का सिविल सेवक में होना आवश्यक है तभी वह कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पालन करते हुए सार्वजनिक हित में कार्य करेगा।

प्रश्न संख्या　　मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet)　　कौटिल्य एकेडमी सफलता का प्रतीक द्वार..

प्र(७) भ्रष्टाचार को कम करने में सामाजिक मीडिया और इंटरनेट की भूमिका बताइए

भ्रष्टाचार का आशय किसी शासकीय कर्मचारी द्वारा अपने सार्वजनिक पद, स्थिति, अधिकार का दुरुपयोग करते हुए किसी प्रकार का आर्थिक या अन्य प्रकार का लाभ प्राप्त करना है।

भ्रष्टाचार को कम करने के लिए जहाँ नियम-कानून का सहारा लिया जाता है वही सोशल मीडिया व इंटरनेट अहम भूमिका निभाता है -

- भ्रष्टाचार को उजागर करना जिससे जनता को ज्ञात होता व सरकार पर दबाव बनता
- स्टिंग आपरेशन के माध्यम
- रिश्वत लेने वालो का वीडियो सोशल मीडिया पर अपलोड कर
- शासन-प्रशासन में डिजिटलीकरण
- ई-प्रशासन
- सरकारी सेवाओं की ऑनलाइन उपलब्धता।

आदि ने शासन-प्रशासन में भ्रष्टाचार को कम किया किंतु अभी भी अधिकतर लोग सोशल मीडिया व

इंटरनेट का उपयोग नहीं करते जिससे
यह साधन ज्यादा कारगार नहीं हो रहे
कभी भ्रष्टाचार की घटनाए सुनाई देती
जैसे मनरेगा में भ्रष्टाचार, व्यापम घोटाला आदि
इसके लिए व्यापक पैमाने पर जागरूकता व
~~इस~~ लोगो को शिक्षित होने की आवश्यकता है

प्रश्न संख्या

(Mains Answer Sheet)

(9) आसन एवं प्रशासन मे सांवेगिक बुद्दि की उपयोगिता का परीक्षण करे

सांवेगिक बुद्दि का तात्पर्य मनुष्य की उस क्षमता से जिसमें वह अपने और दूसरे के संवेगों को देखना, समझना, संवेगों की तीव्रता और प्रभाव का आकलन कर तिर्किक उन्हे नियंत्रित व प्रबंधित करना है। अत: प्रत्येक राजनीतिज्ञ व प्रशासक को सांवेगिक बुद्दि से युक्त होना चाहिए।

आसन व प्रशासन में सांवेगिक बुद्दि की उपयोगिता को देखे तो वह निम्न है

आसन में उपयोगिता :-

- विभिन्न दबाव समूहो के प्रबंधन में नेताओं में उच्च दर्जे की सांवेगिक बुद्दि होनी चाहिए
- जनता को प्रेरित
- सामाजिक परिवर्तन या नवाचार के लिए
- भाषावाद व क्षेत्रवाद जैसी समस्याओं के समाधान के लिए

प्रशासन में उपयोगिता

- सांवेगिक बुद्धि प्रशासनिक अधिकारियों में सहयोग, समायोजन, संवेदनशीलता, अभिप्रेरणा जैसे तत्वों को बढ़ात
- अधिकारी विपरीत परिस्थितियों में निराश नहीं
- स्वयं पहल कर या सहकर्मियों को अभिप्रेरित कर लक्ष्य को पूरा करना
- नवाचार के लिए जागरूक व प्रोत्साहित
- सांप्रदायिक दंगों में कमी
- जनता को उपयोगी कार्यक्रम बनाना तथा उसमें उनकी भागीदारी के लिए प्रोत्साहित

इस तरह हम शासन व प्रशासन में सांवेगिक बुद्धि की उपयोगिता को समझकर जनता के हित में लोकनिष्ठता के तौर कार्यों का संपादन किया जा सकता है।

(Mains Answer Sheet)

(9) (D) प्रबोधक संप्रेषण की संकल्पना की विवेचना कीजिए?

प्रबोधक संप्रेषण एक प्रकार का संचार, अभिव्यक्ति है जो उद्देश्यपूर्ण विवेक व तर्क देकर श्रोताओं और पाठकों की मनोवृत्ति में परिवर्तन के उद्देश्य से संचालित किया जाता है।

जैसे - सीधे वार्तालाप, पोस्टर, वीडियो, रेडियो, टेलीविजन, अखबार आदि के माध्यम से होता है।

उपयोगिता
प्रबोधक संप्रेषण की विशेषताओं को निम्न प्रकार से देखा जा सकता

- इसके माध्यम से नकारात्मक मनोवृत्ति को सकारात्मक मनोवृत्ति में परिवर्तन किया जा सकता है।
- समाज व धार्मिक क्षेत्र में इसके माध्यम से कुरीतियों व अंधविश्वास को समाप्त किया जा सकता है
- प्रबोधक सम्प्रेषण से नेताओं द्वारा जनता को अपनी पार्टी की ओर आकर्षित कर सकते हैं
- भले केवल इसके माध्यम से क्षेत्रवाद

जाति की जग
भाषावाद जैसी अलगाववादी भावनाओं को परिवर्तित कर सकते है

- दंगों को होने से रोका जा सकता है।
- लोकसेवक उनके माध्यम से विभिन्न वर्गों में सामंजस्य व समन्वय स्थापित कर सकता।
- लोगों की मनोवृत्ति को सही दिशा में मोड़ा जा सकता है

इस तरह प्रभावी संप्रेषण से जनहित व देशहित में कार्यों को संपादन किया जा सकता है।

(k) लोक सेवा में समानुभूति के महत्व को बताइए ?

उ. समानुभूति संवेगात्मक भाव से संबंधित है, जिसमें दूसरों की समस्याओं को गहनता पूर्वक सुनते हैं, महसूस करते हैं तथा उसे दूर करने का प्रयास करते हैं इससे संवेदनशील सक्रियता का भाव प्रकट होता है। लोकसेवक को ऐसे मूल्यों का होना आवश्यक है
लोक सेवा में समानुभूति के महत्व को निम्न प्रकार से समझ सकते हैं

- कमजोर वर्गों के दुःखों को दूर करने के लिए
- वंचितों के प्रति समर्पण भाव
- योजनाओं का लाभ सही लाभार्थी तक पहुंचाने के लिए
- लोककल्याणकारी राज्य की स्थापना
- जनता का प्रशासन में विश्वास बढ़ाने
- जनसहभागिता के लिए।
- प्रशासन में निष्पक्षता के पालन
- सुशासन की स्थापना

आदि कार्यों को कर्तव्यनिष्ठता

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

व ईमानदारी पूर्वक करने के लिए लोक सेवा में समानुभूति का होना आवश्यक है तभी जनकेन्द्रित शासन की स्थापना होगी जिसके केंद्र में जनता होगी व लोक सेवक उसकी सेवा के लिए हमेशा तैयार रहेंगे तभी सामाजिक - आर्थिक समानता स्थापित होगी।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

Q (ग) लोक प्रशासन में नैतिक दुविधा को समझाइए

जब किसी नैतिक दुविधा के आशय किसी व्यक्ति के पास दो या दो से अधिक विकल्प हो एवं यह विकल्प एक-दूसरे भिन्न व एक साथ न चुने जा सकते हो किंतु किसी एक विकल्प को चुनना अनिवार्य व किसी भी विकल्प से पूर्ण संतुष्टि न हो तो ऐसी स्थिति नैतिक दुविधा की होती है

लोक सेवा में नैतिक दुविधा को दो प्रकार से देख सकते हैं

- व्यक्तिगत लाभ आधारित नैतिक मूल्य में दुविधा
- द्विविकल्पीय नैतिक मूल्यों में दुविधा

व्यक्तिगत लाभ आधारित नैतिक मूल्य में दुविधा ⇒ इसमें व्यक्तिगत लाभ व सार्वजनिक लाभ के बीच दुविधा की स्थिति

- इसमें हम सार्वजनिक हित को वरीयता देंगे निर्णय लेते समय।

द्विविकल्पीय नैतिक मूल्यों में दुविधा ⇒ जब दोनों विकल्प नैतिक मूल्य से जुड़े हों

निर्णय
- तो ऐसी स्थिति में निर्णय कानून, नियम के आधार पर
- सामाजिक हित व राष्ट्रीय हित को वरीयता
- वरिष्ठ अधिकारियों के अनुभव से

उपरोक्त के आधार पर लोक सेवा मे नैतिक दुविधा की स्थिति को सुलझा सकते है व उचित निर्णय ले सकते है जिसमें सभी का हित समाहित हो

(31) मनोवृत्ति के निर्माण के उत्तरदायी विभिन्न कारकों को समझाइये?

मनोवृत्ति का आशय किसी व्यक्ति का, किसी व्यक्ति के प्रति विश्वास, विचार, व्याख्या (संज्ञानात्मक घटक), पसंद-नापसंद का भाव (भावनात्मक घटक), अनुकूल या प्रतिकूल व्यवहार, कार्य करने की तत्परता (व्यवहारात्मक घटक) को लिया जाता है।

अभिवृत्ति जन्मजात नहीं होती बल्कि परिस्थिति, अनुभव, सामाजिक वातावरण के साथ अंतःक्रिया के फलस्वरूप धीरे-2 विकसित होती जिसमें निम्न कारक उत्तरदायी होती है -

कारक
- सहचर्य द्वारा सीखना
- दण्ड पुरस्कार
- रोलमॉडल
- समूह के माध्यम
- अन्य

सहचर्य द्वारा सीखना => इसके अंतर्गत परिवार, विद्यालय, मित्र आदि आते है जिनके सहयोग से मनोवृत्ति का निर्माण होता।

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

दण्ड व पुरस्कार => पुरस्कार व दण्ड(s)
के माध्यम से अच्छे
कार्यों के प्रति सकारात्मक व दण्ड व निंदा
के कार्यों नकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण

(3) रोलमॉडल => अपने पसंदीदा रोलमॉडल
को देखकर उनके अनुसार कार्य

(4) समूह के माध्यम => किसी विशेष अवसर
पर हम क्या करेंगे इसका
निर्धारण समूह के माध्य

अन्य - मीडिया, पुस्तकें, महान व्यक्तित्व,
आदि अभिवृत्ति निर्माण में सहायक

उपरोक्त कारण मनोवृत्ति के
निर्माण में सहायक होते हैं जो मनुष्य को
अच्छे कार्यों के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति का
निर्माण करते हैं

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

(9) गुरुनानक जी के दर्शन को समझाइये।

गुरुनानक जी सिक्ख सम्प्रदाय के प्रथम गुरु थे जिन्होंने 15 वी शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधारकों में से एक थे उनके उपदेशों ने जनता के मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ी है

इनके दर्शन को हम निम्न बिंदुओं के आधार पर देख सकते है-

गुरुनानक जी का दर्शन

- एक ईश्वर मे विश्वास
- सतनाम और बल
- गुरु का महत्व
- सामाजिक कुरीतियों खंडन
- धर्म सिद्धांत

एक ईश्वर पर बल – ईश्वर को सर्वशक्तिमान उनका कहना था कि ईश्वर को किसी मंदिर तक सीमित नही किया जा सकता वह प्रत्येक व्यक्ति के अंदर है

सतनाम पर बल – गुरुनानक जी ने जोर देकर कहा प्रभु के 'सतनाम' उच्चारण ही पूर्ण समर्पण की प्राप्ति संभव

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

- मस्तिष्क काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से ग्रसित व सतनाम की ओर उन्मुख नहीं हो सकता
- सतनाम का उच्चारण मस्तिष्क को बुराईयों से हटाकर ईश्वर में संलग्न कर सकता है

सामाजिक कुरीतियों का विरोध => समाज में व्याप्त अंधविश्वास व रूढ़ीवाद का विरोध
- जातिप्रथा का बहिष्कार
- वर्णव्यवस्था का विरोध
- विश्व बंधुत्व की बात
- मूर्ति पूजा का विरोध
- समानता पर बल

धर्म सिद्धांत - ईश्वर एक
- जगत के कण-कण में ईश्वर
- एक ईश्वर की आराधना
- दुरेवार्य के बारे में सोचना नहीं
- ईमानदारी व मेहनत से रोजीरोटी
- भेदभाव को समाप्त
- सदैव प्रसन्न
- लोभ-लालच, संग्रह प्रवृत्ति से दूर
- मोक्ष की प्राप्ति हेतु प्रयास

इस तरह गुरुनानक जी ने अपने वाणी से समाज की बुराईयों पर कुठाराघात किया व परमात्मा प्राप्ति का मार्ग बताया तथा उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार..

Q. 3

Case study 1

उपरोक्त मामले का गंभीरता से अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि यह मुद्दा कानून के उल्लंघन (बाल विवाह + दहेज प्रथा), मनोवृत्ति, अनुनय-विनय आदि से संबंधित है।

इस मामले में दो पक्षकार उभरकर आते है

एक आप – आपके समक्ष चुनौति बाल विवाह रोकना
 बिना पुलिस शिकायत

दोस्त (बाल विवाह करा रहा) – आर्थिक स्थिति को लेकर विवश

उक्त प्रकरण निम्न समस्याओं के बारे में ध्यान आकृष्ट किया

- लोगो में दहेज विरोधी कानून व बाल विवाह लेकर जागरूकता का अभाव
- बाल विवाह से जो समस्या उत्पन्न होगी उसकी अज्ञानता
- कानून के बाद में लोगो की मनोवृत्ति में परिवर्तन नहीं

संख्या (Mains Answer Sheet)

आदि समस्याये उभरकर आती है जो बाल विवाह को रोकने में बाधक हो

(B) बाल विवाह से निम्न समस्याएँ होगी
- आने वाली पीढी कुपोषण ग्रस्त
- माता -बच्चे के स्वास्थ्य पर प्रभाव
- कम उम्र में शादी से उत्तरदायित्व का अभाव
- जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा मिलता।
- बाल विवाह शिशु व मातृ मृत्यु दर को बढाता
- परिवार की देखभाल अच्छे से नही)

आदि समस्यायें उभरकर आती जो देश के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगाती

(C) बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम, 2006 होने के बावजूद बाल विवाह को पूर्णत: रोका नहीं जा सका

किंतु व्यापक स्तर पर
- शिक्षा के प्रसार
- जागरूकता
- कानून के भय
- लोगो की मनोवृत्ति में परिवर्तन कर

बाल विवाह को व्यापक स्तर पर कम किया गया किंतु इसका उन्मूलन अभी नही हो सका

Qu. 4

Case study - 2

उपरोक्त मामले के अध्ययन से ज्ञात होता है कि यह मामला सत्यनिष्ठा, सहानुभूति, कार्य के प्रति समर्पण, पितृसत्तात्मक आदि से संबंधित है

इस केस में दो पक्ष है

	चुनौतियाँ
आप (वाणिज्य कर अधिकारी के पद पर चयन)	कार्य का न होना (अवविकुरिवधा एवं समत उप. है)
गांव की कुरिवधा महिला	- अधिकारों का प्रयोग स्वयं नहीं करती - महिला कार्यों की अवहेलना आदि

मैं उक्त परिस्थिति को निम्न रूप से देखता हूं

- समाज में अभी भी कुरूपवादी प्रवृत्ति विद्यमान
- महिलाओं द्वारा अपने अधिकारों का प्रयोग नहीं किया जाता
- महिलाओं के राजनैतिक अधिकारों के प्रति

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

उदासीनता
- अपने कर्तव्यों का पालन नहीं किया
- स्व विवेक से कार्यों की अवहेलना

(2) स्थानीय निकायों में महिलाओं को 33% आरक्षण का प्रावधान किया गया किंतु इस मामले में आरक्षण की व्यवस्था का दुरुपयोग किया जा रहा है।

यदि हम इस मामले के आरक्षण दुरुपयोग को लेकर महिला आरक्षण की संकल्पना को असफल नहीं कह सकते क्योंकि कई गांव की मुखिया महिलाये महिलाओं की समस्याओं, गांव के विकास व जनहित आदि कार्यों को बड़ी सक्रियता से कर रही है

यदि हम महिला आरक्षण (स्थानीय निकायों) को हटा दे तो इससे महिलाओं की राजनीति मे भागीदारी न केवल घटेगी, स्वतंत्रता समानता व अपने अधिकारों से वंचित रह जायेगी अतः आरक्षण की व्यवस्था को असफल नहीं कहा जा सकता।

(3) इस समस्या के समाधान के लिए निम्न कदमों उठाना आवश्यक होगा
- महिलाओं की शिक्षा पर जोर देना
- महिलाओं में अपने अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना

- महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करना
- पुरुषों की मनोवृत्ति में परिवर्तन ताकि महिलायें रूपये कार्यों को अन्देख कर सकती है

उपरोक्त कदमों को उठाकर इस समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है

(4) आरक्षण के दुरुपयोग की यह समस्या स्थानीय राजनैतिक स्तर तक सीमित न होकर यह अन्य क्षेत्रों में भी दिखाई देती-

सामाजिक क्षेत्र => पुरुष प्रधान मानसिकता
=> घरेलू कामकाज में उलझन अन्य कोई निर्णय लेने में कोई प्राथमिकता नही
- समाज में महिलाओं को कमजोर समझना आदि

आर्थिक क्षेत्र => समान काम में कम वेतन
=> महिलाओं के कामकाज को कुछ क्षेत्रो तक सीमित (घरेलू, पढ़ाना आदि)

धार्मिक क्षेत्र => महिलाओं से पुजापाठ नही
=> मंदिरो के प्रवेश रोकना.

अतः महिलाओं के संदर्भ यह समस्या सभी क्षेत्रो दिखाई देती है

(5) उपरोक्त परिस्थिति में नैतिक मूल्य
- कर्तव्यों का दृढ़ता से पालन नही
- सत्यनिष्ठा का अभाव

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

प्रश्न संख्या

- जनहित के कार्यों की अवहेलना
- पद का दुरुपयोग
- मनोवृत्ति
- समर्पण की भावना का अभाव
- जवाबदेहिता का अभाव
- गोपनीयता आदि मूल्यों को शामिल किया जा सकता है